गगास

द्विमासिक ई पत्रिका

उत्तराखण्ड शासन

अंक-09

डॉ0 प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण (अल्मोड़ा)

फरवरी -मार्च 2026

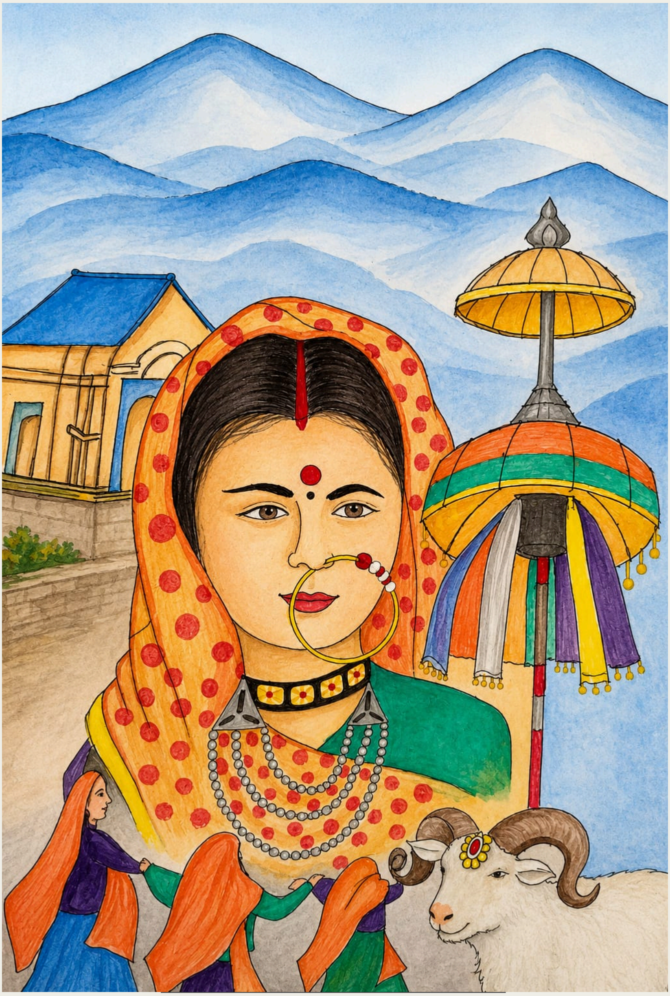

सम्पादक मण्डल

सम्पादक– डॉ0 इन्दिरा , असि0 प्रो0 भौतिक विज्ञान

तकनीकी संपादक – डॉ0 परितोष उप्रेती, असि0 प्रो0 भूगोल

सहसम्पादक– डॉ0 दीपा लोहनी , असि0 प्रो0 इतिहास

छात्रा सम्पादक– निशा रावत, बी0ए0 पंचम सेमेस्टर

छात्र सम्पादक– सुमित बिष्ट, बी0ए0 पंचम सेमेस्टर

तकनीकी सहयोग– श्री पूरन सिंह जलाल

सलाहकार– 1– डॉ0 इला बिष्ट, असि0 प्रो0 समाजशास्त्र
2– डॉ0 सुभाष चन्द्र आर्य, असि0 प्रो0 हिन्दी

आवरण–मोनिका रावत , बी0ए0 षष्ठम सेमेस्टर

प्राचार्य एवं संरक्षक

प्रो0 शर्मिला सक्सेना,
प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, भिकियासैंण (अल्मोड़ा)

विषयानुक्रमणिका

01- शुभकामना संदेश

02- सम्पादकीय

03- विद्यार्थियों की कलम से

04- अतिथि की कलम से

06- उपलब्धियां

07- सुर्ख़ियों में महाविद्यालय

08- मीमांसा

09- महाविद्यालय परिवार

10- इनफॉरमेशन डेस्क

E-Mail-gdc.manila@gmail.com
☎ 05966 – 248123

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुणीधार मानिला, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

पत्रांक 297 /शु0सं0/2025–26 दिनांक: 18/12/2025

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त आनन्द की अनुभूति हो रही है कि राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण (अल्मोड़ा) महाविद्यालय की द्विमासिक ई–पत्रिका "गगास" के अंक–08 प्रकाशित करने जा रहा है। यह अवसर महाविद्यालय के प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्रों के लिए गौरव का क्षण है, तथा हम सब मिलकर महाविद्यालय के उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते हैं ताकि भविष्य में उत्कृष्ट शिक्षा के क्षेत्र में महाविद्यालय अग्रणी संस्थान के रूप में अपनी पहचान सुनिश्चित कर सके।

मैं ई–पत्रिका "गगास" के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

प्राचार्य
डॉ0 गिरजा शंकर यादव
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुणीधार
मानिला अल्मोड़ा।

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कुणीधार, मानिला (अल्मोड़ा)

Scanned with OKEN Scanner

शुभकामना संदेश

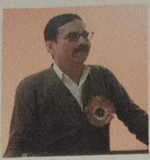

शुभकामना सन्देश

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका गगास अंक 09 के लिए महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, यह पत्रिका पाठको के लिए ज्ञान, विचारों और प्रेरणा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और मुझे उम्मीद है कि यह पाठकों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाएगी। पत्रिका में विभिन्न विषयों पर लेख आपके मन को प्रेरित और आपके ज्ञान में वृद्धि करेंगे। पत्रिका के लेखकों और योगदानकर्ताओं ने अपने अनुभव और ज्ञान को इस पत्रिका में साझा किया है और मुझे उम्मीद हैं कि आप इसे पढ़कर लाभ उठाएंगें।

एक बार पुनः मैं महाविद्यालय से प्रकाशित हो रही पत्रिका के संपादन के लिए बधाई देता हूँ और महाविद्यालय के उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

शंकर दत्त फुलारा

शंकर दत्त फुलारा,
सामाजिक कार्यकर्ता,
भिकियासेन (अल्मोड़ा)

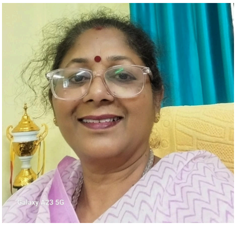

प्रो० (डा०) शर्मिला सक्सेना

प्राचार्य का संदेश

द्विमासिक ई–पत्रिका 'गगास' के माध्यम से संपादक मंडल द्वारा छात्र–छात्राओं को रचनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करने का सराहनीय कार्य सतत रूप से किया जा रहा है इसके लिए उन्हें साधुवाद एवं शुभकामनाएँ।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में पत्र–पत्रिकाएँ बेहद अहम भूमिका निभाती है और महाविद्यालय की पत्र–पत्रिकाएँ उन्हें जीवन भर पठन –पाठन से सतत जुड़े रहने की प्रेरणा प्रदान करती है। ना जाने कितने सुगंधित पुष्पों के सुप्त बीज सुअवसर पाते ही पुष्पित और पल्लवित हो उठते हैं।

महाविद्यालय परिवार का यह प्रयास सार्थक हो, अनवरत रहे। इसी सुखद कामना के साथ...

प्रो० (डा०) शर्मिला सक्सेना

सम्पादकीय

प्रिय पाठकों,

हमें अत्यंत प्रसन्नता है कि गगास ई-पत्रिका का अंक 9 आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधार्थियों और समाज के बीच विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त मंच बनती जा रही है।

इस अंक की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी है। आज के युवा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे अपने आसपास घटित हो रहे सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय परिवर्तनों को भी गंभीरता से समझ रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण, बढ़ता प्रदूषण, पर्वतीय क्षेत्रों में अनियोजित विकास और सामाजिक असंतुलन जैसे मुद्दे हमारे सामने गंभीर प्रश्न खड़े कर रहे हैं। इस अंक में पर्यावरण संरक्षण और समसामयिक मुद्दों से जुड़े महत्वपूर्ण लेख शामिल किए गए हैं। हमें आशा है कि ये लेख पाठकों को केवल जानकारी ही नहीं देंगे, बल्कि प्रकृति और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने के लिए भी प्रेरित करेंगे।

हमें यह बताते हुए भी प्रसन्नता हो रही है कि इस अंक में पर्यटन विषय पर एक विशेष आलेख अतिथि लेखक द्वारा प्रस्तुत किया गया है। उत्तराखण्ड सहित हिमालयी क्षेत्रों में पर्यटन आज आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण आधार बन चुका है, किन्तु इसके साथ पर्यावरणीय और सांस्कृतिक चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं।

अंत में, हम सभी विद्यार्थियों, लेखकों, शिक्षकों और सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सहयोग और उत्साह से गगास ई-पत्रिका निरंतर आगे बढ़ रही है।
आपके सुझाव और सहभागिता ही हमारी सबसे बड़ी प्रेरणा हैं।

सह संपादक
डॉ परितोष उप्रेती
प्रभारी भूगोल विभाग

Iran–Israel Conflict: Causes and Global Impact

Can regional conflicts affect the peace and stability of the entire world? The conflict between Iran and Israel raises this important question today. This issue has become a major topic of concern at the international level. For many years, both countries have had ideological, political, and strategic differences. Over time these differences have deepened, leading to tension and conflict. As a result, the peace and stability of the Middle East region have been affected, making it a matter of global concern.

Causes of the Iran–Israel Conflict

1. Nuclear Program

One of the major reasons behind the conflict is Iran's nuclear program. Israel believes that Iran may develop nuclear weapons, which could pose a threat to its national security. This suspicion has increased tension and mistrust between the two countries.

2. Ideological and Political Differences

There are strong ideological and political differences between the two nations. Iran opposes the influence of Western countries in the Middle East and supports Palestine. On the other hand, Israel views this as a threat to its security and works with its allied countries to strengthen its military power and national security.

3. Struggle for Influence in the Middle East

Another important reason for the conflict is the competition for influence in the Middle East. Both countries want to expand their political and strategic power in the region. This competition has often created tension and conflict between them.

Global Impact of the Conflict

1. Threat to World Peace

Whether a war is regional or international, its effects can threaten global peace. The Iran–Israel conflict shows how a regional dispute can create fear and instability across the world.

2. Impact on the Global Economy

Iran is an important oil-producing country. Due to conflict, oil supply and transportation may be affected, which can increase global oil prices. This rise in energy prices can slow economic growth in many countries.

3. Global Political Tensions

The conflict has also increased tensions in international politics. Different countries support different sides, which creates pressure in global diplomacy and international relations.

4. Energy and Security Crisis

The instability caused by the conflict may affect energy supply and international security. Since the Middle East is an important region for global energy resources, any conflict there can create worldwide security concerns.

5. Environmental Impact

Wars also damage the environment through explosions, military activities, and destruction of infrastructure. Although this issue receives less attention, environmental damage can have long-term consequences for humans and other living species.

In conclusion, the conflict between Iran and Israel is not limited to these two countries alone. Its effects can influence global politics, the economy, and international security. This situation shows that regional conflicts can threaten world peace and stability. Therefore, it is important for the international community to promote dialogue, diplomacy, and cooperation in order to find a peaceful solution to the conflict.

निशा रावत
बी0ए0 पंचम सेमेस्टर

Climate and Climate Change

My name is Sumit Bisht, and I am a student of B.A. 6th Semester. As a student, I believe that it is very important for us to understand the environmental challenges that our planet is facing today. One of the most serious issues among them is climate change. In recent years, we have been hearing a lot about rising temperatures, melting glaciers, irregular rainfall, and extreme weather conditions. All these changes are directly connected to the Earth's climate.

Climate plays a very important role in maintaining the balance of nature. It influences agriculture, water resources, wildlife, and even human life.

However, due to human activities and rapid industrial development, the natural climate system of the Earth is changing rapidly. This phenomenon is known as climate change.

Climate change has become one of the biggest global challenges of the 21st century. Scientists, governments, and environmentalists are deeply concerned about its impacts on the environment and human society. In this article, I will discuss the meaning of climate, the causes of climate change, its impacts on the Earth, and the steps that can be taken to reduce its effects.

What is Climate?

Climate refers to the long-term pattern of weather conditions in a particular region over a long period of time, usually over 30 years or more. It includes factors such as temperature, rainfall, humidity, wind patterns, and seasons.

Climate is different from weather. Weather describes the short-term atmospheric conditions of a place, such as whether it is sunny, rainy, or windy on a particular day. Climate, on the other hand, represents the average weather conditions over a long period.

For example, the climate of a desert region is generally hot and dry, while the climate of a polar region is extremely cold. Similarly, tropical regions experience warm temperatures and heavy rainfall.

The Earth's climate system is very complex and is influenced by many factors, including the atmosphere, oceans, land surfaces, and living organisms.

What is Climate Change?

Climate change refers to long-term changes in the average temperature and weather patterns of the Earth. These changes can occur naturally, but in recent decades they have been happening mainly due to human activities.

One of the most noticeable aspects of climate change is global warming, which means the gradual increase in the Earth's average temperature. This warming occurs because of the increased concentration of greenhouse gases in the atmosphere.

Greenhouse gases such as carbon dioxide, methane, and nitrous oxide trap heat in the Earth's atmosphere. While these gases are necessary to keep the planet warm enough to support life, an excessive amount of them can cause the Earth's temperature to rise.

As a result, the natural balance of the climate system gets disturbed, leading to various environmental problems.

Causes of Climate Change

Climate change is caused by both natural factors and human activities, but human activities are the main reason for the rapid climate change seen today.

1. Burning of Fossil Fuels

The burning of fossil fuels such as coal, oil, and natural gas for energy releases large amounts of carbon dioxide into the atmosphere. This increases the concentration of greenhouse gases and contributes to global warming. Industries, power plants, and vehicles are major sources of these emissions.

2. Deforestation

Forests play a crucial role in maintaining the balance of the Earth's climate. Trees absorb carbon dioxide from the atmosphere and release oxygen.

However, large-scale deforestation for agriculture, urban development, and industrial activities reduces the number of trees. This leads to an increase in carbon dioxide levels in the atmosphere.

3. Industrialization

Rapid industrial growth has led to increased emissions of harmful gases and pollutants into the atmosphere. Factories release chemicals and greenhouse gases that contribute to climate change.

4. Agriculture and Livestock

Agricultural activities and livestock farming also contribute to climate change. Animals such as cows produce methane gas during digestion, which is a powerful greenhouse gas.

The use of fertilizers also releases nitrous oxide into the atmosphere.

Effects of Climate Change

Climate change has several serious impacts on the environment, ecosystems, and human society.

1. Rising Global Temperatures
One of the most obvious effects of climate change is the increase in global temperatures. The Earth has been getting warmer over the past century.

Higher temperatures can lead to heatwaves, droughts, and water shortages.

2. Melting of Glaciers
Climate change is causing glaciers and polar ice caps to melt at a faster rate. This not only affects wildlife such as polar bears but also contributes to rising sea levels.

For regions like the Himalayas, glacier melting can affect water supplies for millions of people.

3. Rising Sea Levels
As glaciers melt and ocean temperatures rise, sea levels increase. This can lead to flooding in coastal areas and the loss of land.

Many small island nations are already facing the threat of submergence due to rising sea levels.

4. Extreme Weather Events
Climate change is also increasing the frequency and intensity of extreme weather events such as hurricanes, floods, droughts, and wildfires.

These events can cause huge damage to human life, property, and infrastructure.

5. Impact on Agriculture

Agriculture is highly dependent on climate conditions. Changes in rainfall patterns, temperature, and water availability can reduce crop productivity.

This can lead to food shortages and economic problems for farmers.

Climate Change and India

India is particularly vulnerable to the impacts of climate change due to its large population and dependence on agriculture.

Changes in monsoon patterns, rising temperatures, and extreme weather events can have serious consequences for the country. The melting of Himalayan glaciers can affect major rivers such as the Ganga, Yamuna, and Brahmaputra, which provide water to millions of people.

Steps to Reduce Climate Change

Although climate change is a serious problem, there are many steps that can be taken to reduce its effects.

1. Use of Renewable Energy

Using renewable energy sources such as solar, wind, and hydropower can reduce the use of fossil fuels. This helps decrease greenhouse gas emissions.

2. Planting More Trees

Planting trees helps absorb carbon dioxide from the atmosphere and improves air quality.
Afforestation and reforestation programs are important for controlling climate change.

3. Energy Conservation

Saving electricity and using energy-efficient appliances can reduce energy consumption and emissions.
Simple actions like switching off lights and using public transport can make a difference.

4. Sustainable Development

Countries should focus on sustainable development that balances economic growth with environmental protection.
This includes using eco-friendly technologies and reducing pollution.

सुमित बिष्ट
बी0ए0 पंचम सेमेस्टर

क्या ए-आई से खत्म हो जायेंगे लेखक?

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उदय ने हर क्षेत्र में क्रांति ला दी है, और लेखन जगत भी इससे अछूता नहीं है। यह स्वाभाविक है कि लेखकों और क्रिएटिव प्रोफेशनल्स के मन में अपनी नौकरी और पहचान को लेकर असुरक्षा की भावना आए।

इस विषय के दोनों पहलुओं का विश्लेषण इस प्रकार है:

1. क्या AI लेखकों के लिए एक खतरा है?
कई मायनों में AI पारंपरिक लेखन के कुछ क्षेत्रों को प्रभावित कर रहा है। दोहराव वाले कार्य, जैसे डेटा रिपोर्टिंग, बेसिक समाचार अपडेट और SEO-फ्रेंडली प्रोडक्ट डिस्क्रिप्शन के लिए अब AI का उपयोग होने लगा है।
गति और लागत: AI सेकंडों में हजारों शब्द लिख सकता है, जो किसी इंसान के लिए असंभव है। व्यावसायिक दृष्टि से यह अधिक सस्ता भी पड़ता है।

लेखन का लोकतंत्रीकरण: अब वह व्यक्ति भी ठीक-ठाक कंटेंट लिख सकता है जिसे भाषा पर विशेष महारत हासिल नहीं है। इससे पेशेवर लेखकों की मांग कुछ हद तक कम हो सकती है।

2. AI लेखकों को क्यों नहीं बदल सकता?
भले ही AI भाषा को प्रोसेस कर सकता है, लेकिन वह निम्नलिखित क्षेत्रों में इंसानों की बराबरी नहीं कर सकता।

अनुभव और संवेदना (Empathy): AI के पास अपनी कोई भावना या जीवन का अनुभव नहीं होता। वह केवल उपलब्ध डेटा को मिलाकर प्रस्तुत करता है। इसके विपरीत, एक लेखक का अपना दुख, सुख और दृष्टिकोण उसकी रचना को जीवंत बनाता है।

मौलिकता (Originality): AI पुराने डेटा पर प्रशिक्षित होता है। वह वास्तव में कोई नया विचार उत्पन्न नहीं करता, बल्कि पुरानी चीजों को नए ढंग से प्रस्तुत करता है। क्रांतिकारी विचार हमेशा मानवीय मस्तिष्क से ही आते हैं।

सांस्कृतिक संदर्भ (Cultural Nuance): भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं है। उसमें स्थानीय मुहावरे, कटाक्ष और गहरी सांस्कृतिक समझ शामिल होती है, जिनको समझने में AI अक्सर चूक जाता है।

3. भविष्य: “AI बनाम लेखक” नहीं, बल्कि “AI + लेखक”
भविष्य में लेखक समाप्त नहीं होंगे, बल्कि उनके काम करने का तरीका बदल जाएगा।

लेखक की भूमिका होगी:
तथ्यों की जांच करना और उन्हें गहराई देना।
अपनी विशिष्ट आवाज़ और शैली को जोड़ना।
कहानी के प्रवाह और भावनाओं को निखारना।

निष्कर्ष
AI एक शक्तिशाली उपकरण है, लेकिन यह स्वयं कोई रचनाकार नहीं है। जिस प्रकार कैलकुलेटर ने गणितज्ञों को समाप्त नहीं किया, बल्कि उन्हें जटिल समस्याओं को हल करने में सहायता दी, उसी प्रकार AI भी लेखकों की सहायता करेगा। यह उन लेखकों को चुनौती दे सकता है जो केवल यांत्रिक या दोहराव वाले कार्य करते हैं, लेकिन रचनात्मक, विचारशील और मानवीय संवेदनाओं से युक्त लेखकों को और अधिक सक्षम बनाएगा। लोग मशीनों से नहीं, बल्कि लोगों से जुड़ना चाहते हैं। जब तक कहानियों, विचारों और मानवीय अनुभवों की आवश्यकता रहेगी, तब तक लेखकों की भी आवश्यकता बनी रहेगी।

श्री महेश चंद्र बलोदी
पुस्तकालय सहायक

अतिथि की कलम से

व्यक्ति, परिवार तथा राष्ट्र का दुश्मन : दुर्व्यसन

सुन्दर हैं विहग, सुमन सुन्दर।
मानव ! तुम सबसे सुन्दरतम।।
— सुमित्रानन्दन पंत

प्रकृति की सजीव गोद (कौसानी, अल्मोड़ा) में बैठकर काव्य साधना करते हुए प्रकृति के सुकुमार कवि ने जिस 'सुन्दरतम' मनुष्य की कल्पना की, वस्तुतः वह सहृदयता की अनुपम, अनमोल कृति है। यह कृति भी भू-मण्डल के इस देवभूमि की नैसर्गिक देन है। इसी कारण पाश्चात्य विद्वान मैक्समूलर को संस्कृत की अनायास बोल पड़ी — "आकाश के नीचे मानव मन के सर्वोत्तम पक्ष का विकास यदि कहीं हुआ है तो वह भारत में ही हुआ है।" "नैसर्गिक आनन्ददायी शस्य-श्यामला, विपुल वैभवशाली तथा स्वर्णिम संस्कार युक्त इस देश को 'जगातगुरु', 'सोने की चिड़िया' एवं 'मानव रत्नों की खान' कहा गया। सभी देशवासी ज्ञानी-विज्ञानी थे, सुखी तथा खुशहाल थे, लेकिन दुर्भाग्य के काले बादल उस समय इस देश के आसमान पर मण्डराने लगे, जब यवन, हूण से लेकर अंग्रेज आक्रमणकारियों ने इसकी संस्कृति पर प्रहार किया।

स्वार्थ, लालच तथा कलह की आग यहाँ भड़क उठी। इस देश के बहुमूल्य वैभव को, सुख-चैन को लूट लिया। भारतीय समाज की अच्छाइयों को वे अपने साथ ले गये और अपनी पाश्चात्य विलास शैली तथा अनेक दुर्व्यसनों का जहर यहाँ की गंगाजली संस्कृति में उड़ेल गये। हमने बड़ी शान से अंगीकार कर उन्हें अपनी जीवन शैली का अंग बना लिया। धीरे-धीरे उस जहर का प्रभाव पड़ना प्रारम्भ हुआ, जिससे व्यक्ति का चिन्तन, चरित्र व स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। दया, करुणा, स्नेह, सौहार्द जैसे हृदयमूल्य भाव विलुप्त होते गये। परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, कलह की लपटें समाज चारों ओर फैल गयीं।

अपनी सन्तान को दुर्व्यसन तथा दुश्चिन्तन से होती दुर्दशा को देखकर भारत माता की आत्मा रो उठी, कराह उठी। कौन सुनेगा अब इस करुण क्रन्दन को? कौन स्थापित करेगा भारतीय जनमानस के मन में खो चुके देवत्व के अंश को? कौन होगा रक्षक इन मानवीय मूल्यों का? इसी तरह के अनेक प्रश्न आज जागृत आत्माओं के हृदय-पटल पर छटपटाने लगे हैं। देखते-देखते अपने देश का देव मानव-शराब, पान, तम्बाकू, गुटका, बीड़ी-सिगरेट जैसे उन दुर्व्यसनों का शिकार हो चला, जिन्होंने नागरिक सामाजिक दुष्प्रवृत्तियों व बुराइयों को अपराध व भ्रष्टाचार को, असाध्य रोगों, मनोविकारों तथा अभावों को जन्म दिया है।

व्यक्ति की प्रतिरोधक क्षमता नष्ट होने तथा तनावग्रस्त जीवन जीने से रक्तचाप, कैंसर, मधुमेह, एड्स जैसी जानलेवा बीमारियाँ हो रही हैं। इनसे मरने वालों की संख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। कहा गया है कि “जितने लोग समुद्र, नदी, नालों तथा तालाबों में डूबकर मरे हैं, उससे अधिक शराब के प्यालों में डूबकर मरे हैं।”

चौंकाने वाले आँकड़े भी नशाखोरों को सचेत नहीं कर पा रहे हैं, बल्कि “मधुशाला” की बढ़ाई – “लाख पियें दो लाख पियें” गुणगुणाता हुआ व्यक्ति पैमाने पर पैमाना चढ़ाकर अपने शरीर को खोखला कर रहा है। गुटका खाकर गाल गला रहा है। वह निर्बल, निराश तथा निर्धन होता जा रहा है। न उसके पास इलाज के लिए पैसा बचता है, न अपने परिवार का उचित भरण-पोषण ही कर पाता है। घर में बच्चे बिलखाने लगते हैं। परिवार दुखी रहता है।

कर्ज, बेईमानी, धोखा, असत्य, भ्रष्टाचार इत्यादि में गले तक भरा रहता है। जितना समय, श्रम और धन वह दुर्व्यसनों में फेंकता है, यदि उसे सही लगन से राष्ट्र-समर्पण व श्रेष्ठ कर्म में लगाये, समाज और राष्ट्र विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकता है। तो आइये व्यसन मुक्त समाज बनाने हेतु अपनी-अपनी भूमिका को स्वयं निर्धारित करें। वह स्वर्णिम सुअवसर अब आ गया है। इस क्षण को हाथ से न निकलने दें।

अपनों से अपनी बात — शिक्षक साथियो!

अंग्रेजी भाषा के महान कवि शेक्सपियर की एक रचना से प्रभावित एक धनाढ्य व्यक्ति ने उन्हें एक कीमती शराब की बोतल दी। शेक्सपियर ने उसी व्यक्ति के सम्मुख बोतल की शराब को जमीन में उड़ेल दिया। वह व्यक्ति चौंककर बोला — "यह तुमने क्या कर दिया? इतनी बेशकीमती शराब को मिट्टी में मिला दिया?" शेक्सपियर ने बड़े इत्मीनान से उत्तर दिया, "हाँ जनाब अगर मैं इस शराब को आज मिट्टी में नहीं मिलाता तो निश्चित कल ये मुझे मिट्टी में मिला देती।"

शेक्सपियर का यह कथन उस व्यक्ति सहित अनेकों का जीवन परिवर्तित करता चला गया। काश! हम भी अपने देश में इस तरह के विचारों से प्रभावित होकर उजड़े घरों को आबाद कर सकते, दुर्व्यसनों के शिकार व्यक्तियों का सुख-चैन उन्हें लौटा पाते तथा इस धरती में पुनः वही पुरातन स्वर्णिम युग ला पाते? क्यों नहीं ला सकते?

हम शिक्षक हैं, यदि शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का कारगर औजार माना जाता है तो शिक्षक इस औजार की धार को पैनी करता है। जीवन के हर क्षेत्र में महान क्रांतियाँ हुई हैं किन्तु आज तक शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति नहीं हुई है। समय आ गया है। शिक्षक राष्ट्र का प्रहरी होता है। वह क्रांति की चिंगारी बनकर दावानल फैला सकता है। उसके पास अपार ऊर्जायुक्त छात्र शक्ति पंक्तिबद्ध खड़ी है। केवल बिगुल बजाने की देरी है।

जब अमेरिका के छात्र-शिक्षक अपनी मातृभूमि को दास प्रथा से मुक्त कर सकते हैं। फ्रांसीसी छात्र-शिक्षक अपने देश को चार्ल्स की निरंकुशता से मुक्त कर सकते हैं। तो क्या हम भारतीय छात्र-शिक्षक अपनी मातृभूमि को समाज में फैले दुर्व्यसनों से मुक्त नहीं कर सकते? हाँ अवश्य! आवश्यकता है 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' दर्शन से ओत-प्रोत होकर एक उद्देश्य परक निर्णायक क्रांति करने की। दुर्व्यसन रूपी दानव का नाश होते ही आने वाली पीढ़ी का चिन्तन, चरित्र निश्चित रूप से आभामण्डित होता चला जायेगा तथा समाज से अपराध तंत्र, माफिया तंत्र, अधिनायक तंत्र समूल नष्ट हो जायेंगे।

चूँकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अन्य उत्तरदायित्वों के अधिभार से अध्यापकीय कार्य जटिल हो गया है। छात्रों के अंतरंग में मानवीय सद्गुणों का समावेश करना अत्यन्त कठिन हो गया है। फिर भी हिमालयी दृढ़ इच्छाशक्ति, भगीरथ प्रयास तथा भीष्म प्रतिज्ञा के साथ हम स्वयं अपने एवं अपने परिवार से 'दुर्व्यसन निवारण अभियान' का श्री गणेश करें। व्यसन मुक्त समाज बनाने के संकल्प के साथ आगे बढ़ें तो हमारा सुन्दर सपना अवश्य साकार होगा —

मैं अकेला ही चला था, जानिबे मंजिल मगर।
लोग साथ आते गये, और "कारवाँ" बनता गया।।

कुबेरसिंह कड़ाकोटी
सामाजिक कार्यकर्ता
भिकियासैंण अल्मोड़ा

उपलब्धियाँ

माह-फ़रवरी 2026

दिनांक- मार्च 2026

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण के योग प्रशिक्षक श्री अजय चंद्र पांडे द्वारा स्थानीय क्षेत्र व विद्यालयों में निःशुल्क योग प्रशिक्षण।

दिनांक- 19 फ़रवरी 2026

19 फरवरी 2026
अर्थशास्त्र सिद्धांत और व्यवहार पुस्तक का विमोचन

दिनांक 25 फरवरी 2026

महाविद्यालय की रोवर्स-रेंजर्स इकाई के तत्वावधान में 'चिंतन व प्रशिक्षण शिविर आयोजित

दिनांक- दिनांक 25 फरवरी 2025
महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग के तत्वावधान में एक दिवसीय व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन।

दिनांक 09 मार्च 2026

महाविद्यालय में सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन स्थापित

11मार्च 2026

महाविद्यालय की एनएसएस इकाई के तत्वावधान में एनएसएस विशेष शिविर का शुभारंभ।

दिनांक 11 मार्च 2026

महाविद्यालय की करियर काउंसलिंग समिति एवं कौशल विकास विभाग समिति के संयुक्त तत्वावधान में मौन पालन पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन।

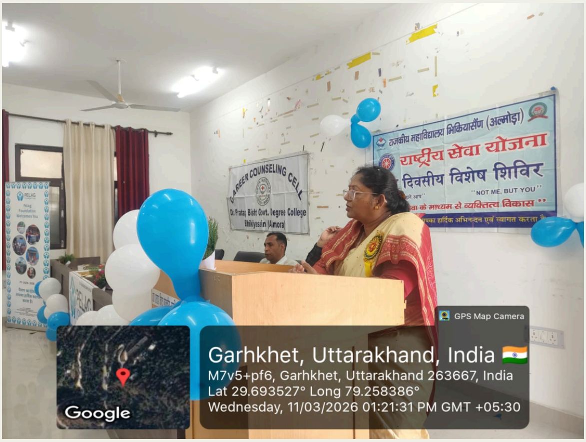

17 मार्च 2026

एनएसएस सात दिवसीय विशेष शिविर का समापन।

दिनांक- 27-28 अक्टूबर 2025

राष्ट्रीय सेवा योजना सात दिवसीय विशेष शिविर (दिनांक 11 मार्च -17 मार्च 2026) के अंतर्गत स्वयंसेवियों द्वारा वॉल पेंटिंग (भित्ति चित्र) का निर्माण।

सुर्ख़ियों में महाविद्यालय

महाविद्यालय की दीवारों पर उकेरी देवभूमि की संस्कृति

भिकियासैंण। डा.प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में इन दिनों महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना के दिशा-निर्देशन में महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवी छात्र-छात्राओं द्वारा कलात्मक कार्य किया जा रहा है।

यह कार्यक्रम इतिहास विभाग प्रभारी डा. दीपा लोहनी द्वारा संचालित किया जा रहा है। जिसके तहत महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन करते हुए वॉल पेंटिंग के माध्यम से उत्तराखंड की लोक संस्कृति को जीवंत कर रहे हैं। इस रचनात्मक कार्य में महाविद्यालय के प्रतिभावान छात्र-छात्राएं, हर्षिता, रश्मि, दीपा नैलवाल, सिमरन गोस्वामी, मोनिका रावत और सपना मुख्य रूप से अपनी कला का प्रदर्शन कर रहे हैं। इन स्वयंसेवियों द्वारा महाविद्यालय परिसर की दीवारों पर पारम्परिक ऐपण कला, पारंपरिक वेशभूषा लोक वाद्य यंत्र, राज्य प्रतीक और ग्रामीण परिवेश के साथ-साथ प्राकृतिक सुंदरता के चित्र उकेरे जा रहे हैं। प्राचार्य प्रो. सक्सेना ने छात्रों की सराहना करते हुए कहा कि छात्र-छात्राओं की तूलिका से निर्मित ये चित्र न केवल परिसर को सुंदर बना रहे हैं, बल्कि अन्य छात्रों को भी अपनी समृद्ध विरासत को सहेजने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। समस्त महाविद्यालय परिवार ने छात्रों के इस कलात्मक कार्य की खूब प्रशंसा की है।

दीवार पर पेंटिंग बनाती छात्राएं

12.03.2026

राजकीय महाविद्यालय में एनएसएस शिविर शुरू

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में एनएसएस का सात दिवसीय विशेष शिविर शुरू हो गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना व संचालन कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सोनम ने किया। मुख्य अतिथि राजेंद्र सिंह बिष्ट, विशिष्ट अतिथि तरन्नुम, प्राचार्य व प्राध्यापकों ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। डा. सोनम ने कार्यक्रम के तहत प्रत्येक दिवस होने वाली गतिविधियों की जानकारी दी। इस अवसर पर एनएसएस इकाई की सदस्य डॉ. इंदिरा, डॉ. दीपा लोहनी, डॉ. इला बिष्ट, पूरन सिंह जलाल, श्याम सुन्दर, प्रदीप कुमार उपस्थित रहे।

एनएसएस शिविर में महिला सुरक्षा पर किया जागरूक

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में एनएसएस के सात दिवसीय विशेष शिविर के तीसरे और चौथे दिन आयोजित कार्यक्रम में स्वयं सेवियों ने स्थानीय समुदाय को शिक्षा के महत्व, नशा उन्मूलन और महिला सुरक्षा के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना ने की, जबकि संचालन एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डा. सोनम ने किया। शारीरिक सत्र में स्वयं सेवियों ने रैली निकालकर स्थानीय लोगों को शिक्षा और नशा मुक्ति के प्रति जागरूक किया। बौद्धिक सत्र में मुख्य अतिथि हेमा पांडे, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अल्मोड़ा ने पॉक्सो एक्ट, नालसा, सालसा और हेल्पलाइन के बारे में जानकारी दी। बौद्धिक सत्र में मुख्य अतिथि पुलिस कौकी से एसआई सुरेश चंद्र मिश्र ने स्वयंसेवियों को साइबर सुरक्षा, यातायात नियमों और नशा मुक्ति के बारे में जागरूक किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राध्यापक, कर्मचारी और सभी स्वयंसेवक उपस्थित थे।

अर्थशास्त्र सिद्धांत और व्यवहार पुस्तक का विमोचन

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. शर्मिला सक्सेना ने अर्थशास्त्र विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. विश्वनाथ पाण्डेय की लिखित पुस्तक अर्थशास्त्र सिद्धांत और व्यवहार का विमोचन किया। पुस्तक के लेखक डा. विश्वनाथ पाण्डेय ने बताया कि यह पुस्तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नवीन पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। यह पुस्तक न केवल महाविद्यालयी विद्यार्थियों के लिए सहायक होगी, बल्कि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे अभ्यर्थियों के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी। डा. पाण्डेय ने जानकारी साझा की कि विद्यार्थियों की सुविधा के लिए यह पुस्तक फ्लिपकार्ट और अमेजन जैसे प्रमुख ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर भी उपलब्ध कराई गई है। विमोचन के इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर स्टाफ ने डॉ. पाण्डेय को उनकी इस अकादमिक उपलब्धि पर बधाई दी और पुस्तक की सफलता के लिए शुभकामनाएं दी।

विज्ञान के सिद्धांतों को प्रत्यक्ष देखेंगे विद्यार्थी

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने, प्रशिक्षण लेने और उन्हें नवाचार से जोड़ने के उद्देश्य से महाविद्यालय ने आगामी दिनों में बाल विज्ञान खोजशाला बेरीनाग के भ्रमण का निर्णय लिया है। इस कार्यक्रम को डा. परितोष उप्रेती संचालित करेंगे। भ्रमण के दौरान छात्र-छात्राओं को विज्ञान के सिद्धांतों को प्रत्यक्ष रूप से देखने और समझने का अवसर मिलेगा।

महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना ने बताया कि भ्रमण का उद्देश्य छात्र-छात्राओं में रचनात्मकता,जिज्ञासा और शोध की भावना पैदा करना है। यह भ्रमण छात्र-छात्राओं को भविष्य में जीवकोपार्जन तथा कौशल विकास में सहायक सिद्ध होगा। इसके लिए जल्दी ही तिथि घोषित की जायेगी।

कार्यशाला में मौनपालन की दी जानकारी

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में महाविद्यालय की करियर काउंसलिंग समिति व कौशल विकास समिति के संयुक्त तत्वावधान में मौन पालन पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना की अध्यक्षता और मार्गदर्शन में आयोजित की गई। कार्यशाला विषय विशेषज्ञ के रूप में पैलाग फाउंडेशन अल्मोड़ा से राजेंद्र सिंह बिष्ट और तरन्नुम उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना और कार्यशाला विषय विशेषज्ञ राजेंद्र सिंह बिष्ट, तरन्नुम व प्राध्यापकों ने किया। मुख्य वक्ता राजेंद्र सिंह बिष्ट ने प्रशिक्षुओं को मौन पालन पर विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई। उन्होंने कार्यक्रम की सराहना करते हुए छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षण लेने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला में महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं, महाविद्यालय स्टॉफ और स्थानीय लोगों सहित 36 प्रशिक्षुओं ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम का संचालन डा. दीपा लोहनी ने किया। इस दौरान डा. विश्वनाथ पांडे, डा. कौशल अग्रवाल, डा. दयाकृष्ण, डा. इला, डा. साबिर हुसैन, डा. सुभाष चंद्र, डा. परितोष, हेम कबडवाल, योगेश भट्ट, श्याम सुंदर, गीतांजलि, सुमित्त बिष्ट, मोनिका, नीरज आदि रहे।

14-मार्च 2026
उत्तर उजाला

चिंतन व प्रशिक्षण शिविर आयोजित

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में रोवर्स-रेंजर्स संस्थापक लॉर्ड बेडेन पॉवेल के जन्मदिवस पर चिंतन एवं प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर डॉ. शर्मीला सक्सेना की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। संचालन रोवर्स प्रभारी दिनेश कुमार ने किया। शिविर में रोवर्स-रेंजर्स के प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षक के रुप में अटल उत्कर्ष राजकीय इंटर कॉलेज भिकियासैंण से स्काउट-गाइड प्रभारी बाला दत्त शर्मा ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रविन्द्र सिंह उपस्थित रहे। प्राचार्य प्रोफेसर डॉ. शर्मीला सक्सेना ने बेडेन पॉवेल की शिक्षाओं को स्मरण करते हुए रोवर्स-रेंजर्स को सेवा, अनुशासन एवं कर्तव्यपरायणता जैसे गुणों को अपने जीवन में आत्मसात करने के लिए प्रेरित किया।

महाविद्यालय में सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन स्थापित

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में छात्राओं के स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा उन्हें सुरक्षित व सुलभ सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से एल्डा फाउंडेशन, लखनऊ ने महाविद्यालय को सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन नि:शुल्क प्रदान की। प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना ने एल्डा फाउंडेशन, लखनऊ का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह वेंडिंग मशीन न केवल महाविद्यालय की छात्राओं के लिए एक महत्वपूर्ण सुविधा है, बल्कि यह उन्हें पीरियड्स के दौरान आने वाली चुनौतियों से निपटने में आत्मविश्वास भी प्रदान करेगी। इससे पूर्व भी एल्डा फाउंडेशन, लखनऊ की अध्यक्ष डा. पूजा शाहीन ने व्याख्यान कार्यक्रम के माध्यम से महाविद्यालय के छात्रों को जागरूक करने में सराहनीय योगदान दिया है।

सकारात्मक सोच के साथ जीवन में आगे बढ़ें

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में वनस्पति विज्ञान विभाग के तत्वावधान में एक दिवसीय व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना की अध्यक्षता में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत भौतिक विज्ञान प्रभारी डॉ. इंदिरा द्वारा मुख्य वक्ताओं एवं उपस्थित श्रोताओं के स्वागत के साथ की गई। मुख्य वक्ता के रूप में कीर्ति वर्धन, सेवानिवृत्त प्राचार्य राजकीय इंटर कॉलेज नौला उपस्थित रहे। अपने संबोधन में कीर्ति वर्धन ने विद्यार्थियों को सकारात्मक सोच अपनाकर जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। बताया कि कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य, आत्मविश्वास और निरंतर प्रयास से सफलता प्राप्त की जा सकती है।

मीमांसा

यह पुस्तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा प्रतिपादित 'पंच परिवर्तन' के पाँचों सिद्धांतों—स्वत्व बोध, सामाजिक समरसता, नागरिक कर्तव्य, कुटुंब प्रबोधन और पर्यावरण संरक्षण—का एक गहन और प्रासंगिक विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इसमें संघ की सौ वर्षों की वैचारिक यात्रा और सेवा कार्यों को 'विकसित भारत 2047' के व्यापक लक्ष्य के साथ जोड़कर देखा गया है, जो वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का समाधान देने का प्रयास करता है।

विशेष रूप से युवाओं और प्रबुद्ध वर्ग के लिए लिखी गई यह पुस्तक यह स्पष्ट करती है कि सामाजिक चेतना, मूल्यनिष्ठ जीवन और सांस्कृतिक गौरव ही राष्ट्र निर्माण का सबसे सशक्त मार्ग है।

यह पुस्तक समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करता है। इसमें दिए गए उदाहरण और केस स्टडीज़ वास्तविक जीवन में इन सिद्धांतों को लागू करने में मदद करते हैं।

पुस्तक का उद्देश्य समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट करना और राष्ट्रहित में कार्य करने के लिए प्रेरित करना है। यह पुस्तक युवाओं को अपने देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने और उन्हें निभाने के लिए प्रेरित करना है।

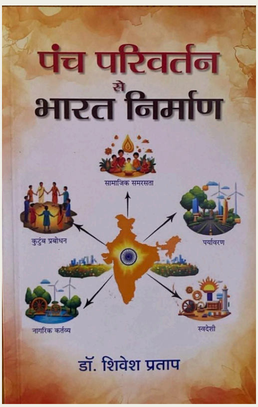

श्री महेश चंद्र बलोदी
पुस्तकालय सहायक

महाविद्यालय परिवार

प्राचार्य

प्रो॰ (डॉ॰) शर्मिला सक्सेना

प्राध्यापक वर्ग

अर्थशास्त्र विभाग
डॉ॰ विश्वनाथ पाण्डेय
(असि॰ प्रोफेसर)

हिन्दी विभाग
डॉ॰ सुभाष चन्द्र आर्य
(असि॰ प्रोफेसर)

राजनीति विज्ञान विभाग
डॉ॰ दिनेश कुमार
(असि॰ प्रोफेसर)

इतिहास विभाग
डॉ॰ दीपा लोहनी
(असि॰ प्रोफेसर)

समाजशास्त्र विभाग
डॉ॰ इला बिष्ट
(असि॰ प्रोफेसर)

अंग्रेजी विभाग
डॉ॰ कौशल कुमार
(असि॰ प्रोफेसर)

भूगोल विभाग
डॉ॰ पारितोष उप्रेती
(असि॰ प्रोफेसर)

वाणिज्य विभाग
डॉ॰ गौरव कुमार
(असि॰ प्रोफेसर)
डॉ॰ राजीव कुमार
(असि॰ प्रोफेसर)

वनस्पति विज्ञान विभाग
डॉ॰ सोनम
(असि॰ प्रोफेसर)

जन्तु विज्ञान विभाग
डॉ॰ दयाकृष्ण
(असि॰ प्रोफेसर)

रसायन विज्ञान विभाग
डॉ॰ साविर हुसैन
(असि॰ प्रोफेसर)

भौतिकी विज्ञान विभाग
डॉ॰ इंदिरा
(असि॰ प्रोफेसर)

कार्यालय

श्री गौरव कुमार
(कनिष्ठ लिपिक)

श्री प्रदीप कुमार (उपनल)
(कनिष्ठ लिपिक)

प्रयोगशाला सहायक

श्री बिरेन्द्र राम
(जन्तु विज्ञान)

श्री शेरसिंह
(भौतिक विज्ञान)

श्री विनोद कबडवाल
(वनस्पति विज्ञान)

श्री योगेश भट्ट
(रसायन विज्ञान)

अनुसेवक

श्री पूरन जलाल (उपनल)

श्री श्याम सुन्दर (उपनल)

श्री सुरेश कुमार (उपनल)

श्री सतीश कुमार (उपनल)

Info Desk

College Website- https://gdcbhikiyasain.in/

College Fb ID- https://www.facebook.com/photo/?fbid=525965566878099&set=a.525965573544765

College Youtube - UCV7z6yOzKf2rhW4jz9qzBfA

SSJU Website- https://www.ssju.ac.in/

Routes to Roots- https://r2rdigital.routes2roots.com/

Skill Development Programme-
https://www.msde.gov.in/

Anti-Ragging-
https://www.antiragging.in/affidavit_affiliated_form.php

Anti Drug-
https://pledge.mygov.in/fightagainstdrugabuse/